मिज़ोरम की मरा भाषा की लोक कथा

अनाथ लड़के की कथा

प्रो. संजय कुमार
एवं
डेविड के. अजयु

बहुत पुराने जमाने की बात है, मिजोरम के दक्षिणी भाग के किसी गाँव में एक अनाथ लड़का रहता था। वह बहुत गरीब था। गाँव वाले उस लड़के से बहुत नफ़रत करते थे। कोई भी उसे प्यार करने वाला नहीं था। जब गाँव का कोई शिकारी शिकार मारकर लाता तो मरा जनजाति की परंपरा के अनुसार गाँव वालों के बीच शिकार का भाग बाँटा जाता था। परंतु उस अनाथ लड़के को हर बार शिकार का सबसे खराब भाग ही नसीब होता था।

एक दिन की बात है उसके पास खाने को कुछ भी नहीं था और उसे काफी भूख लगी थी। उस समय उसके मन में विचार आया कि वह नदी पर चला जाए। ऐसा विचार आते ही वह नदी की ओर चल पड़ा। नदी के पास पहुँचकर वह नदी के उद्गम स्रोत की ओर चलने लगा। चलते-चलते अचानक एक स्थान पर उसे किसी पुष्प की अत्यंत मीठी खुशबू की गंध आयी। वह सोचने लगा- "इतनी अच्छी खुशबू कहाँ से आ रही है?" वह अपना सिर उठाकर ऊपर की ओर देखने लगा। ऊपर की ओर उसने एक बहुत सुंदर फूल को देखा। वह तुरंत ऊपर जाकर एक फूल तोड़कर सूंघने लगा। उस फूल को नाक से सूंघते ही उसकी भूख जाती रही और उस अनाथ लड़के का पेट भर गया। इसके बाद वह अपने भूख को भूल गया। इस बात का ज्ञान होते ही उसने एक बक्सा बनाकर उसमें बहुत सारे फूल भर लिया और घर लौट आया।

अब उस गरीब अनाथ लड़के को कोई काम करने की आवश्यकता नहीं रही। जब भी उसे भूख लगती वह उस फूल की खुशबू सूँघ लेता और उसका पेट भर जाया करता था। अब उसे अपने खाने-पीने की चीजें ढूँढ़ने कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती थी। वह हमेशा अपने घर में ही बैठा रहता था। इस पर गाँव के सरदार (मुखिया) को उस अनाथ पर शक होने लगा कि आखिर वह क्या खाता है! यह पता लगाने के लिए उसने अपने नौकर को भेजा। नौकर अनाथ लड़के के घर जाकर छान-बीन कर लौट आया और सरदार (मुखिया) को बताया कि "उसके घर पर खाने की कोई भी चीज नहीं है।" इस पर मुखिया बहुत हैरान हुआ कि उस अनाथ लड़के के घर में खाने की जब कोई भी चीज नहीं है और वह कोई काम भी नहीं करता

है तो फिर वह अपना पेट क्योंकर और कैसे भरता है! उसके बाद सरदार ने अपनी नौकरानी को उसके घर के रहस्य का पता लगाने भेजा। नौकरानी अनाथ लड़के के घर जाकर हर तरफ़ तलाश कर हार गई पर उसे कुछ भी नहीं मिला। वह मन ही मन सोचने लगी कि खाना पकाने के लिए तो इसके घर में चावल तक नहीं है। तभी अचानक उसे एक स्थान पर टंगा हुआ एक बक्सा दिखाई दिया। वहाँ पहुँचकर उसने उस बक्से को नीचे उतारा और उसे खोल कर देखा तो पाया कि उस बक्से में बहुत खुशबूदार फूल रखे हुए हैं। उस फूल की खुशबू को नाक से सूंघते ही उसका पेट भी भर गया। तब उस नौकरनी को इस रहस्य का पता चल गया कि वह अनाथ लड़का उस फूल की खुशबू से अपना पेट भरता है। इस खबर को बताने के लिए वह दौड़ती हुई अपने सरदार (मुखिया) के घर जा पहुँची। हाँफती हुई वह सरदार को बतायी कि जिस चीज से वह अनाथ लड़का अपना पेट भरता है उस चीज का पता उसे लग चुका है। मुखिया नेअपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए पूछा-"अरे! वह कौन-सी चीज है?" नौकरनी ने जवाब दिया-"उस अनाथ लड़के के पास बहुत ही खुशबूदार फूल हैं, उस फूल की खुशबू सूँघकर कर ही वह अपना पेट भर लेता है। इस चीज के अलावा उसके घर में और कोई खाने-पीने की चीज नहीं है। मैंने भी जब उस फूल को सूँघा तो मेरा पेट भर गया। वहाँ जाते वक्त तो मुझे बहुत भूख लगी थी। लेकिन फूल की खुशबू सूँघते ही भूख मिट गयी। इसलिए वह लड़का उस फूल की खुशबू के सहारे ही आसानी से अपना जीवन यापन कर रहा है।"

तब मुखिया ने अपने नौकरों में से एक को उस अनाथ लड़के को बुलाने का आदेश दिया। सरदार (मुखिया) के आदेशानुसार वह अनाथ लड़का मुखिया के घर पहुँचा। तब सरदार ने उसे आदेश दिया कि- "जैसा फूल तुम्हारे पास है, वैसा ही फूल मुझे भी लाकर दो। यदि तुम वह फूल नहीं ला पाओगे तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।" मृत्यु के भय से वह अनाथ लड़का उस फूल को लाने के लिए चल पड़ा। चलते-चलते वह बैंगन की बागवानी करती हुई एक स्त्री के पास पहुँचा। उस स्त्री ने पूछा- "हे अनाथ बच्चे! तुम कहाँ जा रहे हो?"उस अनाथ लड़के ने जवाब दिया- "मूंगा का फूल (Coral Flower) लाने के लिए जा रहा हूँ।" फिर उस स्त्री ने उससे कहा-"लौटते समय मुझे भी बुला लेना, एक साथ घर चलेंगे।"

उसके बाद वह अनाथ लड़का आगे चल पड़ा। चलते-चलते वह एक तीसई बस्ती में जा पहुँचा। तीसई बस्ती में भी एक स्त्री ने उस अनाथ से पूछा- "हे अनाथ बच्चे! तुम कहाँ जा रहे हो?" उस अनाथ लड़के ने पुनः जवाब दिया कि "मैं मूंगा का फूल (Coral Flower) लाने के लिए जा रहा हूँ।" उस स्त्री ने भी कहा-"तब तो लौटते वक्त तुम मुझे भी बुला लेना।" वह अनाथ लड़का आगे बढ़ता गया। चलते-चलते फिर वह मेईसाई बस्ती जा पहुँचा। वहाँ फिर उस बस्ती की एक स्त्री ने पूछा-"हे अनाथ बच्चे! तुम कहाँ जा रहे हो?" उस अनाथ लड़के ने पुनः जवाब दिया-"मैं मूंगा का फूल (Coral Flower) लाने जा रहा हूँ।" उस स्त्री ने भी कहा-"तब लौटते वक्त मुझे भी बुलाना।" उसकी बात सुनकर वह अनाथ लड़का आगे बढ़ गया।

चलते-चलते वह एक स्थान पर पहुँचा, जहाँ एक स्त्री घाघरा बुन रही थी। उस स्त्री ने भी पहले की स्त्रियों के समान ही प्रश्न किया और उस अनाथ लड़के ने उत्तर दिया कि-"मैं मूंगा का फूल (Coral Flower) लाने जा रहा हूँ।" फिर इस स्त्री ने भी पहली वाली स्त्रियों की तरह ही कहा-"लौटते वक्त मुझे भी बुलाना।" वह लड़का वहाँ से भी आगे बढ़ गया। चलते-चलते वह उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ चाँद की स्त्री रहती थी। तब चाँद की स्त्री ने भी पहले वाली स्त्रियों की तरह ही सवाल किया और उस अनाथ लड़के ने उत्तर दिया कि-"मैं मूंगा का फूल (Coral Flower) लाने जा रहा हूँ।" तब चाँद की स्त्री ने कहा-"जरा ठहरो! अगर तुम मूंगा का फूल (Coral Flower) लाने जाने वाले हो तो मैं दो-तीन बातें तुम्हें बताना चाहती हूँ।" उस अनाथ लड़के ने उसकी बात मान ली। तब दोनों घर के अंदर गए। उस स्त्री ने कुछ जरूरत की चीजें, चूल्हे की राख और कुछ अन्य सामान उसके हाथ में दिये। साथ ही साथ मूंगा के पेड़ के पास सावधान रहने और उचित व्यवहार करने के तरीके भी उसको समझा दिया। फिर उसने उससे कहा कि-"लौटते वक्त मुझे भी बुलाना।"

वह अनाथ लड़का वहाँ से आगे बढ़ता गया और अंत में उस जगह पर जा पहुँचा,जहाँ मूंगा के पेड़ थे। मूंगा के फूलों को तोड़ने के लिए तब वह उसके पेड़ पर चढ़ गया। काफी देर तक वह मूंगा के पेड़ के ऊपर फूलों को तोड़ता रहा। मूंगा के बहुत सारे फूलों को तोड़ लेने के बाद जब वह पेड़ से नीचे उतरने लगा तो देखा कि पेड़ के नीचे कई नरभक्षी उसे खाने के चक्कर में इंतज़ार कर रहे हैं। तब उसने चाँद की स्त्री का दिया हुआ चूल्हे की राख़ अपने हाथ में लिया और उन नरभक्षियों को कहा-"तुम सभी लोग मेरी ओर देखो।" सभी नरभक्षी एक साथ उस अनाथ लड़के की ओर देखने लगे। तभी शीघ्रतापूर्वक उस अनाथ लड़के ने सभी नरभक्षियों की आँखों में राख फेंक दिया। आँखों में राख के पड़ते ही सभी नरभक्षी कुछ भी देख पाने में असमर्थ हो गए। तब तुरंत ही वह लड़का पेड़ पर से नीचे उतर कर वहाँ से भाग निकला। चलते-चलते वह चाँद की स्त्री के घर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने गीत के सुर में उस स्त्री को आवाज दी-

"थ्लपा जुआह जुआह वानों

पाकु चियाची पोनों चा आवोलाला"

अर्थात् : "हे चाँद की स्त्री,

मूंगा का फूल (Coral Flower) लेने आ जा, आ जा।"

तब चाँद की स्त्री ने भी अपने सुमधुर आवाज में जवाब दिया-"मेरा इंतज़ार कर। मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ।" चाँद की स्त्री के घर से बाहर आने के बाद दोनों एक साथ आगे चल दिये। चलते-चलते वे उस जगह जा पहुँचे, जहाँ तारे की स्त्री रहती थी। उस अनाथ लड़के ने पुनः गीत के द्वारा उसे बुलाया-

"ओसी जुआह जुआह वानो

चियाचीपो चा आवोलाला"

अर्थात् : "हे तारे की स्त्री,

मूंगा का फूल (Coral Flower) लेने आ जा।"

तब तारे की स्त्री ने भी मधुर स्वर में जवाब दिया-"ठीक है! मेरा इंतज़ार कर। मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ।" उसके बाहर आने के बाद वह अनाथ लड़का उन दोनों स्त्रियों के संग आगे चल पड़ा। चलते-चलते वे लोग तिसाइ बस्ती जा पहुँचे। जैसे गीतमय शब्दों में उसने पहले वाली स्त्रियों को बुलाया था ठीक उसी प्रकार उसने तिसाइ बस्ती की स्त्री को भी आवाज दी। अनाथ लड़के की आवाज सुनकर तिसाइ बस्ती की स्त्री भी उसके पीछे हो ली। इस प्रकार जाते समय उस अनाथ लड़के को राह में जो जो स्त्रियाँ मिली थीं, वे सब लौटते समय उसकी सुमधुर आवाज पर उसके पीछे चल पड़ीं। चलते-चलते सब एक साथ उस अनाथ लड़के के गाँव और घर जा पहुँचे।

सभी स्त्रियाँ उस अनाथ लड़के को प्रेम करने लगीं थीं। वे सभी उस अनाथ लड़के पर अपना प्रेम अलग-अलग तरीके से प्रकट कर रही थीं। कुछ उसके हाथ-पैर धो रही थीं तो कुछ उसके बाल धो रही थीं और कुछ उसके शरीर की मालिश भी कर रही थीं। इस प्रकार वे सभी उस अनाथ लड़के के प्रति अपने प्यार को प्रकट कर रही थीं। जब गाँव के मुखिया को इसकी खबर मिली तो वह बहुत नाराज हुआ। उसने अपने नौकरों में से एक को उस अनाथ लड़के को बुलाने के लिए उसके घर भेजा। उस अनाथ लड़के के घर पहुँचकर वह नौकर मुखिया का संवाद सुनाने के लिए अपना मुँह खोला ही था कि उसके "मुखिया...." कहते ही उन स्त्रियों ने नौकर से कहा-"तुम अपनी जीभ जरा बाहर निकालो।" ज्यों ही उस नौकर ने अपनी जीभ बाहर निकाली तो स्त्रियों ने चाकू से उसकी जीभ काट डाली। वह रोता हुआ अपने मुखिया के पास वापस चला गया। परंतु वहाँ जाकर भी वह कुछ बता नहीं पाया। तब नाराज होकर मुखिया ने दूसरे नौकर को भेजा। दूसरा नौकर भी जब उस अनाथ लड़के के घर पहुँचा तो उसकी जीभ भी उन स्त्रियों ने काट दी। कटी हुई जीभ लेकर वह भी मुखिया के पास रोता हुआ लौट आया और कुछ भी बता नहीं पाया। बाकी के नौकरों के साथ भी वैसा ही व्यवहार होता देखकर मुखिया बहुत क्रोधित हुआ। क्रोधित होकर उसने खुद ही वहाँ जाने का फैसला किया और वह स्वयं ही उस अनाथ के घर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उस अनाथ लड़के को चारों ओर से खूबसूरत स्त्रियों से घिरा हुआ पाकर मुखिया हैरान हो गया।

तब मुखिया ने उस अनाथ लड़के को चुनौती देते हुए कहा-"हम दोनों में प्रतियोगिता होगी और देखते हैं हम दोनों में से कौन जीतता है! इसके लिए हम दोनों आग के ऊपर से छलांग लगाएँगे।" तब दोनों आग जलाकर उसके ऊपर से छलांग लगाने को तैयार हो गए। मुखिया ने छलांग लगाकर उस आग को पार

कर लिया। वह अनाथ लड़का भी स्त्रियों की सहायता से आग को पार कर गया। अब मुखिया ने दूसरी योजना बनाई। उसने उस अनाथ लड़के को ललकारते हुए कहा- "अब हम दोनों एक बहुत बड़ी नदी में छलांग लगाएँगे और देखते हैं कि कौन उसे पार कर लेता है और जीतता है।" दोनों पास में ही बहने वाली एक बड़ी नदी में प्रतिद्वंद्विता करने चल पड़े। पुनः उन स्त्रियों ने उस अनाथ लड़के की सहायता की और वह भी नदी में छलांग लगाकर उसे पार करने में सफल हो गया। अब मुखिया ने उस अनाथ लड़के को तलवार (दाव) से युद्ध करने की चुनौती दी। मुखिया एक माँझा हुआ योद्धा था जबकि वह अनाथ लड़का उसकी तुलना में अभी बच्चा था। उसे ठीक तरह से तलवारबाजी नहीं आती थी। द्वंद्व युद्ध प्रारंभ हुआ। दोनों एक दूसरे पर आक्रमण करने लगे और अंत में मुखिया ने उस अनाथ लड़के को तलवारबाजी में मार दिया। सभी स्त्रियाँ उस अनाथ लड़के की किसी भी प्रकार से कुछ भी सहायता नहीं कर पायीं।

जब वह अनाथ लड़का मारा गया तो गाँव के मुखिया ने उन सभी खूबसूरत स्त्रियों को अपनी पत्नी के रूप में रखने का मन बनाया। उसने अपने एक नौकर को उन्हें बुलाने के लिए भेजा। परंतु मुखिया के पास जाने से बचने के लिए वे सभी स्त्रियाँ बहाना बनाकर टाल मटोल करती रहीं। वे कल-परसों आने का वादा करती थीं पर वे वहाँ नहीं जाती थीं। इस प्रकार दो-तीन बार पहले नौकर के खाली हाथ लौट आने के उपरांत मुखिया ने दूसरे नौकर को उन्हें बुलाने के लिए भेजा। पर वे स्त्रियाँ वहाँ जाने को तैयार नहीं थीं। वे पहले की तरह ही बहाने बनाती रहीं। अंततः वह मुखिया बहुत क्रोधित हुआ और स्वयं ही उन स्त्रियों को बुलाने चल पड़ा। जब वह उस अनाथ लड़के के घर पहुँचा तो उसने उन स्त्रियों के बीच उस अनाथ लड़के को जिंदा बैठा हुआ पाया। यह देखकर वह बहुत हैरान हुआ क्योंकि उस अनाथ लड़के को उसने स्वयं मार डाला था, अब वह जीवित कैसे हो सकता है। जिज्ञासावश उसने इस विषय में उन स्त्रियों से पूछा तो उन स्त्रियों ने उस अनाथ लड़के के पुनः जीवित होने के बारे में सारी बातें उसे बतायीं। उन्होंने कहा- "हमने उस अनाथ लड़के की लाश को सबसे पहले आग में जलाया और फिर उसकी हड्डियों को इकट्ठा किया तथा उसे खटखटाया। उसकी कू...कू...कू... करके आवाज करने वाली हड्डियों को हमने फेंक दिया और कि ...कि... कि ... आवाज करने वाली हड्डियों को सफ़ेद कपड़े में रखकर बाँध दिया और पानी के लहर के नीचे दफ़ना दिया। फिर तीन दिनों बाद जाकर देखा तो पाया कि वह अनाथ लड़का पहले से भी सुंदर और अच्छी कदकाठी में वापस आ गया है। जीवित हो जाने के बाद उस अनाथ लड़के को हम लोग अपने साथ ले आयीं।" उनकी बातों को सुनकर मुखिया ने उन स्त्रियों से आग्रह किया कि- "मैं बहुत काला और कुरूप हूँ। जिस प्रकार तुम लोगों ने उस अनाथ लड़के को सुंदर बना दिया है ठीक उसी प्रकार मुझे भी सुंदर बना दो।" मुखिया की बात मानकर उन स्त्रियों ने मुखिया को मार डाला। फिर उसकी लाश को जलाकर उसकी हड्डियों को जमा किया। उसकी जो हड्डियाँ कू ... कू... कू ... कर आवाज करती थीं उनको इकट्ठा कर रख लिया और जो कि ... कि ... कि ... कर आवाज करती थीं उनको फेंक दिया। इकट्ठा की हुई हड्डियों को उन्होंने काले

कपड़े से बाँधकर पानी की लहरों के नीचे दफ़ना दिया। तीन दिनों बाद जाकर देखा तो पाया कि मुखिया पहले से भी अधिक काला और बदसूरत शक्ल में जीवित हो गया है।

वे स्त्रियाँ उस मुखिया को उसके घर पहुँचा आयीं। घर वाले बदसूरत और खराब चेहरे के साथ उस मुखिया को देखते ही हक्के बक्के से रह गए। वह मुखिया भी यह जानकर परेशान हो गया कि यह क्या हो गया है? इतने बदसूरत और खराब चेहरे के साथ वह कैसे वापस जीवित हो सकता है! सभी गाँव वाले अब उसकी बदसूरती का मज़ाक उड़ाने लगे। मुखिया को अब अपनी करनी पर पश्चाताप होने लगा पर अब कुछ नहीं हो सकता था। मुखिया को अब अपनी बाकी जिंदगी अपने बदसूरत और खराब चेहरे के साथ गाँव वालों का ताना सहते हुए गुजारनी पड़ी। दूसरी ओर वह अनाथ लड़का अपनी कई खूबसूरत पत्नियों के संग बड़े मजे से और आजादी के साथ ज़िंदगी बिताने लगा।

(**परिचय** : प्रो. संजय कुमार मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आईजॉल के हिंदी विभाग में अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। संपर्क सूत्र: 9774517465) **(डेविड के. अजयु** मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आईजॉल के हिंदी विभाग में शोधरत हैं।)